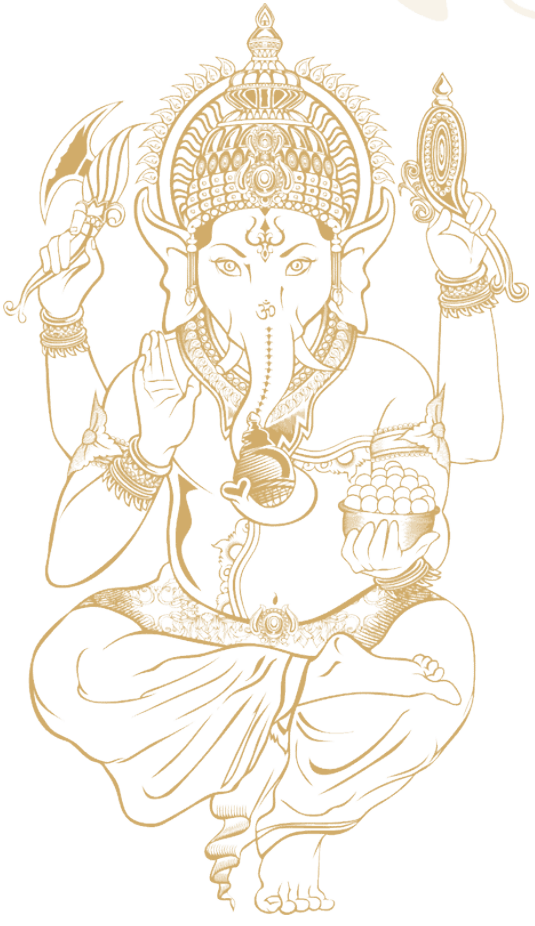

Reyaan Anghotra

05 Jun 2020

01:06 PM

Northampton

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121248401**

तिथि 05/06/2020 **समय** 13:06:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Northampton **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:08:15
अक्षांश 52:15:00 उत्तर **रेखांश** 00:50:00 पश्चिम **मध्य रेखांश** 00:00:00 पश्चिम **स्थानिक संस्कार** -01:03:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:00:11 घं
वेलान्तर	00:01:24 घं
सूर्योदय	04:44:54 घं
सूर्यास्त	21:19:22 घं
चैत्रादि संवत	2077
शक संवत	1942
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	15
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	सिद्ध
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नो-नौनिहाल
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

बुध 16वर्ष 3मा 29दि

बुध

05/06/2020
04/10/2036

बुध	02/03/2022
केतु	27/02/2023
शुक्र	28/12/2025
सूर्य	04/11/2026
चन्द्र	04/04/2028
मंगल	01/04/2029
राहु	20/10/2031
गुरु	24/01/2034
शनि	04/10/2036

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 9मा 19दि

उल्का

25/03/2025
26/03/2031

उल्का	26/03/2026
सिद्धा	26/05/2027
संकटा	24/09/2028
मंगला	24/11/2028
पिंगला	25/03/2029
धान्या	24/09/2029
भ्रामरी	25/05/2030
भद्रिका	26/03/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			25:25:01	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	---	0:00			
सूर्य			21:08:48	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि	1.81	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			17:11:32	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	नीच राशि	1.23	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			21:32:09	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.30	आत्मा	भ्रातृ	मित्र
बुध			14:40:58	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	केतु	स्वराशि	1.33	पुत्र	ज्ञाति	वध
गुरु	व		02:21:19	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	नीच राशि	0.99	कलत्र	धन	क्षेम
शुक्र	व	अ	18:20:56	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	स्वराशि	1.64	भ्रातृ	कलत्र	प्रत्यारि
शनि	व		07:18:40	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	केतु	स्वराशि	1.11	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		04:57:25	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	सूर्य	उच्च राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		04:57:25	धनु	मूल	2	केतु	मंगल	उच्च राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

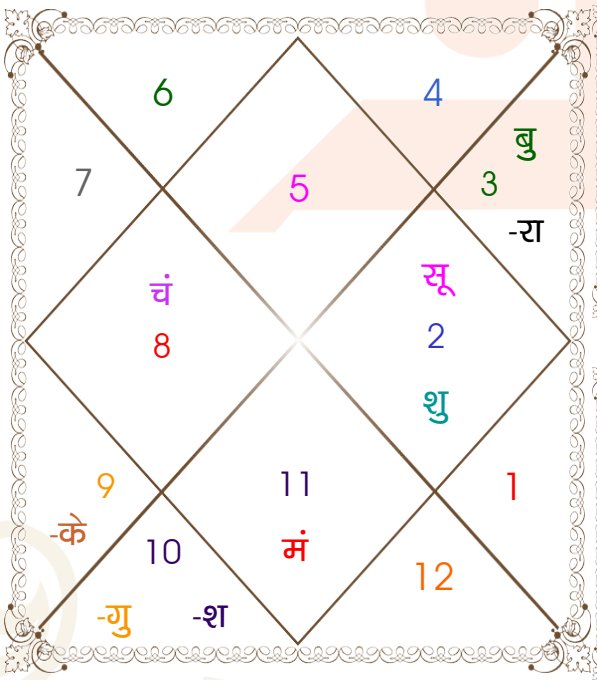

चन्द्र कुंडली

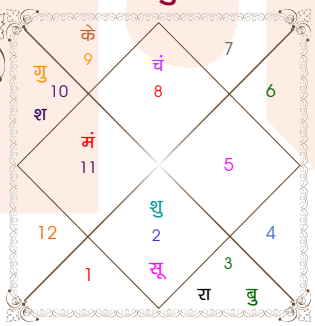

नवमांश कुंडली

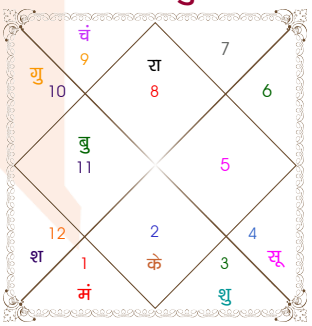

सर्वाष्टकवर्ग

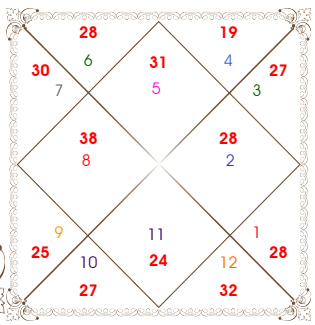

दशमांश कुंडली

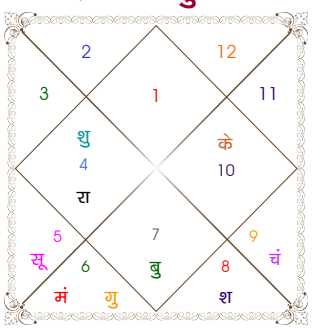

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण राक्षस, योनि मृग, नाड़ी आद्य तथा वर्ग सर्प रहेगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नो" या "नौ" अक्षर से होगा।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। अतः इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक बड़े भाई के लिए अनिष्टकारी होता है। अतः जन्म समय में ही शास्त्रीय विधि से इस नक्षत्र की शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए तथा 27 दिन के बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन इसके दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से इसकी शान्ति करके इसका अनिष्ट प्रभाव हीन हो जाता है।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप अपने समाज में एक ख्याति प्राप्त पुरूष होंगे तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी आपका शरीर भी कान्ति तथा लावण्यता से युक्त रहेगा जिससे शारीरिक सुन्दरता की वृद्धि होगी। नाना प्रकार के धनैश्वर्य से युक्त रहकर आप एक समर्थवान पुरूष होंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा जीवन में प्रसन्नता पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आप एक पराक्रमी व्यक्ति भी रहेंगे तथा अन्य सभी लोग आपका प्रभुत्व स्वीकार करेंगे। समाज में आप लोकमान्य एवं श्रेष्ठ प्रतिष्ठा के धनी समझे जाएंगे एवं सभी लोग आपको हृदय से सम्मान अर्पित करेंगे। भाषण देने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगे तथा श्रोताओं को प्रभावित करने में पूर्ण सफल रहेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

यदा कदा आप अत्याधिक मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको आर्थिक तथा सामाजिक हानि होगी। समाज में अन्य जनों से आपके प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति भी होंगे तथा ईश्वर एवं धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा विश्वास रखेंगे।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः इनमें आप स्वयं प्रधान एवं लोकप्रिय रहेंगे। आपका स्वभाव सन्तोषी रहेगा तथा जो भी उपलब्ध हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। लेकिन धार्मिक क्रियाओं का पूर्ण रूपेण आचरण करते हुए भी क्रोध पर आप नियंत्रण करने में सर्वदा असफल रहेंगे।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

लेखन कार्य के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। अतः काव्य लेखन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आप में सहनशीलता का भाव भी पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेगा तथा सुख-दुख को समान रूप से समझने में आप सफल रहेंगे। आप एक चतुर एवं चालाक व्यक्ति होंगे तथा चतुराई से अपने कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। निम्न श्रेणी की लोगों की आपके प्रति मन में हमेशा श्रद्धा की भावना रहेगी।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके

संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका वक्षस्थल विशाल तथा नेत्र सुन्दर तथा बड़े बड़े होंगे। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का समावेश होगा। आपके हाथ या पैर में मछली के आकार का कोई चिन्ह रहेगा तथा हाथ की रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की रहेंगी। गुरूजनों तथा पिता से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा इनसे सहायता तथा स्नेह की प्राप्ति होती रहेगी। बाल्यावस्था में आप काफी बीमार भी रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र तथा चतुर रहेगी अतः अपनी बुद्धि चातुर्य से सरकार के किसी ऊंचे पद को प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। आप क्रूर तथा कठोर कार्यो को करने में रूचिशील रहेंगे। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में आप कार्य कर सकेंगे। यदा कदा आप स्वभाव से अत्यन्त ही कुटिलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे कई लोग आपसे कष्टप्राप्त करेंगे रहेंगे। क्रूरकर्मो के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गुप्त रूप से इनको प्रोत्साहित करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट एवं मस्तक भी आकार में विस्तृत दृष्टिगोचर होगा। आप में लोलुपता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपका शरीर केमाल तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। धर्म तथा ईश्वर के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा। नहीं करेंगे। आपकी दाढी तथा नाखून चोट से ग्रस्त रहेगे। धनैश्वर्य से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही आप विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में दक्ष रहेंगे।तथा किसी न किसी कार्य को को सम्पन्न करते रहेंगे। बन्धुओं से आपको हीती रहेगी। आप के पराक्रम को समाज में अन्य जन हृदय से स्वीकार करेंगे। आपका स्वभाव क्रोधी भी रहेगा।साथ ही सामाजिक जनों से आपके प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी मुकददमे या अन्य समस्या में आप सरकार के द्वारा धन हानि को प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अपने बड़े परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी सुख प्रदान करेंगे। स्त्रियों के विषय में आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान, सहयोग तथा लाभार्जन में सफलता प्राप्त होगी। राजकीय सेवा का अवसर

आपको जीवन में प्राप्त होगा। आपके चित में हमेशा अन्य जनों के धन को पाने की इच्छा की बहुलता रहेगी तथा इसके लिए भी प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप एक दृढ संकल्पी व्यक्ति होंगे तथा जिसके विषय में एक बार सोच लेंगे उसे पूर्ण करके ही रहेंगे। साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा निर्भयता पूर्वक अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

यदा कदा आपके मन में मनोरंजन या अन्य कारणों से जुआ आदि खेलने की इच्छा भी उत्पन्न होगी परन्तु इसमें आपको आर्थिक हानि ही रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की अधिकता के कारण विवाद आदि करने के लिए भी आप हमेशा उद्यत रहेंगे। आप हृदय से कमजोर होंगे। जीवन में आप दुर्लभ अवसरों पर ही शान्ि की अनुभूति कर सकेंगे अन्यथा अपने को अशान्त सा महसूस करेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बचपन से ही आप प्रवासी रहेंगे तथा घर से बाहर अन्य स्थान में निवास करेंगे। अपने बन्धु तथा सम्बन्धियों के प्रति आपके मन में सहयोग भाव रहेगा। समर्थ पुरूष होने के कारण धनार्जन करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की बातें अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपका हृदय भी कठोर रहेगा तथा दया एवं करूणा की भावना का इसमें अल्प ही रहेंगी। आपकी प्रवृति साहसी तथा अकारण ही शीघ्र क्रोधित होने की होगी तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगे। अन्य लोगों से आप समय समय पर वाद विवाद करते रहेंगे। शरीर से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से पीड़ित रह सकते हैं। देखने में आपका स्वरूप भी सामान्य सुन्दर रहेगा। कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कठोर रहेगी जिससे सुनने वाले अप्रसन्न होंगे। अतः आपको आपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का यत्पूर्वक उपयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय होगी तथा प्रत्येक कार्य को स्वच्छन्दता पूर्वक बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृति शान्त होगी तथा उपद्रवादि करने में आपकी बुद्धि नहीं रहेगी। आपके आजीविका के साधन भी अच्छे कार्यों से सम्बन्धित रहेंगे। सत्य एवं धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी एवं जीवन में इसका पालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपका हार्दिक स्नेह तथा लगाव रहेगा एवं इनके आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी प्रवृति साहसी तथा शूरवीरता से युक्त रहेगी एवं वाद विवादों में आप प्रायः विजय ही प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का

पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान या अन्य शुभ कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए साथ ही सोमवार के उपवास भी करने चाहिए। सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में रहेंगे। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से कराने पर भी अशुभ प्रभाव नष्ट होंगे तथा लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।